शुचिपर्यावरणम्

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» मंगलाचरण एवं प्रार्थना

प्रश्न 1 (आसान). मंगलाचरण का क्या अर्थ है?

उत्तर – शुभ आरंभ या किसी काम की शुभ शुरुआत।

प्रश्न 2 (आसान). पहले श्लोक में कितनी चीज़ों के लिए सौ वर्षों की कामना की गई है?

उत्तर – देखने, जीने, सुनने, बोलने और आत्मनिर्भर रहने के लिए।

प्रश्न 3 (मध्यम). दूसरे श्लोक में किस प्रकार के विचारों को आने की प्रार्थना की गई है?

उत्तर – ऐसे कल्याणकारी विचार जो किसी से न दबें, बाधित न हों, अज्ञात विषयों को प्रकट करें और प्रगति को न रोकें।

प्रश्न 4 (कठिन). ये श्लोक हमें क्या नैतिक शिक्षा देते हैं?

उत्तर – ये श्लोक हमें दीर्घायु, अच्छे स्वास्थ्य, स्वावलंबन और हमेशा अच्छे, प्रगतिशील विचारों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। यह हमें सकारात्मक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की शिक्षा देते हैं।

» पाठ परिचय: 'शुचिपर्यावरणम्'

प्रश्न 5 (आसान). 'शुचिपर्यावरणम्' पाठ के कवि कौन हैं?

उत्तर – हरिदत्त शर्मा

प्रश्न 6 (आसान). इस पाठ में कवि ने किस चीज़ पर चिंता व्यक्त की है?

उत्तर – महानगरों में बढ़ते प्रदूषण पर

प्रश्न 7 (मध्यम). कवि महानगरीय जीवन से दूर कहाँ जाने की इच्छा रखते हैं?

उत्तर – नदी-झरनों, वृक्षसमूहों और पक्षियों के कलरव से गुंजित वनप्रदेशों में।

प्रश्न 8 (कठिन). कवि के अनुसार, महानगरों का लौहचक्र हमारे तन और मन पर क्या प्रभाव डाल रहा है?

उत्तर – यह हमारे शरीर और मन दोनों को सुखा रहा है (शोषक है)।

» महानगरीय प्रदूषण का चित्रण (श्लोक 1)

प्रश्न 9 (आसान). महानगरों में दिन-रात क्या चलता है?

उत्तर – कालायसचक्रम् (लोहे का चक्र / मशीनें)

प्रश्न 10 (आसान). लोहे का चक्र किसे सुखाता है?

उत्तर – मनः (मन को)

प्रश्न 11 (मध्यम). 'तनूः पेषयद्' का क्या अर्थ है?

उत्तर – शरीर को पीसता है

प्रश्न 12 (कठिन). 'दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्' इस पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट करो।

उत्तर – इस पंक्ति का भावार्थ यह है कि कवि प्रार्थना करता है कि इन मशीनों के भयानक दाँतों से मनुष्यों का विनाश न हो जाए, अर्थात् महानगरों के प्रदूषण और अत्यधिक यांत्रिक जीवन से मानव जाति को हानि न पहुँचे।

» वाहन जनित प्रदूषण (श्लोक 2)

प्रश्न 13 (आसान). मोटर गाड़ियाँ कैसा धुआँ छोड़ती हैं?
उत्तर – काजल जैसा काला (कज्जलमलिनं)

प्रश्न 14 (आसान). रेलगाड़ियों की पंक्ति क्या करती है?
उत्तर – बहुत शोर करती है (ध्वानम् वितरन्ती)

प्रश्न 15 (मध्यम). महानगरों में चलना क्यों मुश्किल हो गया है?
उत्तर – वाहनों की अंतहीन कतारों (अनन्ताः पघ्क्तयः) के कारण।

» पर्यावरण के दूषित घटक (श्लोक 3)

प्रश्न 16 (आसान). श्लोक के अनुसार क्या निर्मल नहीं है?
उत्तर – जल

प्रश्न 17 (आसान). धरातल कैसा हो गया है?
उत्तर – समलम् (गंदगी से युक्त)

प्रश्न 18 (मध्यम). कवि किस-किस जगह शुद्धिकरण करने की बात करते हैं?
उत्तर – बाहर और अंदर, दोनों जगह।

प्रश्न 19 (कठिन). क्या वायुमंडल, जल, भोजन और धरातल के दूषित होने का कोई संबंध गाड़ियों के धुएँ से है?
उत्तर – हाँ, बिलकुल है। गाड़ियों का धुआँ हवा में मिलकर वायुमंडल को दूषित करता है। यह धुआँ और अन्य प्रदूषक बारिश के पानी में मिलकर जल को भी अशुद्ध करते हैं। ज़मीन पर गिरने से धरातल भी गंदा होता है। अप्रत्यक्ष रूप से ये सब मिलकर खाद्य पदार्थों को भी प्रभावित करते हैं।

» कवि की प्रकृति की ओर जाने की इच्छा (श्लोक 4)

प्रश्न 20 (आसान). कवि कहाँ से दूर जाना चाहते हैं?
उत्तर – नगर से (शहरी प्रदूषण से)

प्रश्न 21 (आसान). कवि क्या देखना चाहते हैं जब वह दूर जाते हैं?
उत्तर – झरने, नदियाँ और जल (पयःपूरम्)

प्रश्न 22 (मध्यम). कवि को 'एकाँत कांतार' में क्यों घूमना है?
उत्तर – क्योंकि उन्हें शहर के शोरगुल से दूर शांति और शुद्धता चाहिए।

» प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन (श्लोक 5)

प्रश्न 23 (आसान). प्रकृति में किसकी माला रमणीय है?
उत्तर – हरे पेड़ों और सुंदर लताओं की।

प्रश्न 24 (आसान). फूलों की पंक्ति कैसे हिल रही है?
उत्तर – हवा से।

प्रश्न 25 (मध्यम). किसे 'रुचिरं संगमनम्' कहा गया है?
उत्तर – नई चमेली का आम से मिलना।

प्रश्न 26 (कठिन). कवि प्रकृति में किन तीन चीज़ों के सौंदर्य का वर्णन करते हैं?
उत्तर – हरे-भरे पेड़ और सुंदर लताओं की माला, हवा से हिलती फूलों की पंक्ति, और आम से मिली चमेली का संगम।

» नगर के शोर और चकाचौंध से मुक्ति (श्लोक 6)

प्रश्न 27 (आसान). कवि मित्र को किस जगह पर चलने को कह रहा है?
उत्तर – कवि मित्र को पक्षियों के कलरव से गूँजते वन प्रदेश में चलने को कह रहा है।

प्रश्न 28 (आसान). नगर का शोर लोगों पर क्या प्रभाव डाल रहा है?
उत्तर – नगर का शोर लोगों को भ्रमित और परेशान कर रहा है।

प्रश्न 29 (मध्यम). 'चाकचिक्यजालं' शब्द का क्या अर्थ है और कवि इससे क्या बचाने को कह रहा है?
उत्तर – 'चाकचिक्यजालं' का अर्थ है नगर की चमक-दमक या चकाचौंध। कवि इससे जीवन के आनंद (जीवितरस) को बचाने को कह रहा है।

प्रश्न 30 (कठिन). इस श्लोक में कवि नगर और वन की किस चीज़ की तुलना कर रहा है?
उत्तर – इस श्लोक में कवि नगर के कोलाहल और चकाचौंध की तुलना वन के पक्षियों के मधुर कलरव और शांति से कर रहा है।

» मानवता और प्रकृति के सह-अस्तित्व की कामना (श्लोक 7)

प्रश्न 31 (आसान). कवि मनुष्य के लिए कैसा जीवन चाहते हैं?
उत्तर – वास्तविक जीवन, न कि जीवित मृत्यु।

प्रश्न 32 (आसान). किस चीज़ को प्रकृति में समाविष्ट नहीं होना चाहिए?
उत्तर – पाषाणी सभ्यता को।

प्रश्न 33 (मध्यम). श्लोक में किन दो चीज़ों के सह-अस्तित्व की बात की गई है?
उत्तर – मानवता और प्रकृति के।

प्रश्न 34 (कठिन). 'जीवन्मरणम्' से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर – सिर्फ़ साँस लेते रहना, बिना किसी वास्तविक आनंद या प्रकृति के साथ संबंध के, ऐसे जीवन को कवि 'जीवित मृत्यु' कहते हैं।

» शब्दार्थ

प्रश्न 35 (आसान). 'पेषयद्' का हिंदी अर्थ बताओ।
उत्तर – पीसते हुए

प्रश्न 36 (आसान). 'धूमः' का अंग्रेजी अर्थ क्या है?
उत्तर – Smoke

प्रश्न 37 (मध्यम). 'जनग्रसनम्' का अर्थ संस्कृत और हिंदी, दोनों में बताओ।
उत्तर – जनभक्षणम् - मानव विनाश

प्रश्न 38 (कठिन). 'चाकचिक्यजालम्' का संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी अर्थ लिखो।
उत्तर – कृत्रिमं प्रभावपूर्णं जगत् - चकाचैंध भरी दुनिया - Web of dazzle

» अभ्यास कार्य: प्रश्नोत्तर, संधि, अव्यय, पर्यायवाची, विलोम

प्रश्न 39 (आसान). प्रकृतिः + एव की संधि करें।
उत्तर – प्रकृतिरेव

प्रश्न 40 (आसान). सलिलम् का पर्यायवाची शब्द लिखें।
उत्तर – जलम् / नीरम्

प्रश्न 41 (मध्यम). पर्यावरणस्य संरक्षणम् _____ प्रकृतेः आराधना। (अव्यय चुनें: सदा/एव)
उत्तर – पर्यावरणस्य संरक्षणम् एव प्रकृतेः आराधना।

प्रश्न 42 (कठिन). धूमम् मुञ्चति की संधि करें।
उत्तर – धूमं मुञ्चति

» अभ्यास कार्य: समास परिचय और प्रश्न निर्माण

प्रश्न 43 (आसान). निम्नलिखित पद का समास विग्रह कर समास का नाम बताइए: 'राजपुत्रः'
उत्तर – समास विग्रह: राज्ञः पुत्रः। समास का नाम: तत्पुरुष समास।

प्रश्न 44 (आसान). रेखांकित पद पर आधारित प्रश्न निर्माण कीजिए: 'बालकः विद्यालयं गच्छति।' (विद्यालयं)
उत्तर – बालकः कुत्र गच्छति?

प्रश्न 45 (मध्यम). दिए गए पद का समास विग्रह कर समास का नाम बताइए: 'यथाशक्ति'
उत्तर – समास विग्रह: शक्तिम् अनतिक्रम्य। समास का नाम: अव्ययीभाव समास।

प्रश्न 46 (कठिन). रेखांकित पद पर आधारित प्रश्न निर्माण कीजिए: 'प्रकृत्याः सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते।' (प्रकृत्याः)
उत्तर – कस्याः सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते?

» योग्यता विस्तार: कवि परिचय, भाव विस्तार, छन्द परिचय

प्रश्न 47 (आसान). कवि हरिदत्त शर्मा किस विश्वविद्यालय में आचार्य थे?
उत्तर – इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय।

प्रश्न 48 (आसान). प्रदूषण के विषय पर पाठ में दिए गए किन्हीं दो तत्त्वों के नाम बताओ।
उत्तर – पृथिवी, जलं, तेजो, वायुः, आकाशः (कोई दो)।

प्रश्न 49 (मध्यम). पाठ 'शुचिपर्यावरणम्' कौन से छन्द में है और इसकी क्या विशेषता है?
उत्तर – यह गीतिका छन्द में है। इसमें स्थायी 'शुचि पर्यावरणम्' है और हर पंक्ति में 26 मात्राएँ होती हैं।

प्रश्न 50 (कठिन). तत्सम और तद्भव शब्द में क्या अंतर है? एक उदाहरण दो।
उत्तर – तत्सम वे शब्द हैं जो संस्कृत से सीधे हिंदी में आए हैं बिना किसी बदलाव के (जैसे 'कज्जल')। तद्भव वे शब्द हैं जो संस्कृत से हिंदी में आते-आते बदल गए हैं (जैसे 'काजल')।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. यजुर्वेद के पहले श्लोक में 'शरदः शतम्' का क्या अर्थ है?

› श्लोक में 'शरदः शतम्' का प्रयोग कई बार किया गया है।
› इसका संदर्भ 'पश्येम शरदः शतम्', 'जीवेम शरदः शतम्' आदि क्रियाओं के साथ है।
› 'शरद' का अर्थ यहाँ 'वर्ष' या 'साल' है।
› 'शतम्' का अर्थ 'सौ' है।
› अतः, 'शरदः शतम्' का अर्थ 'सौ वर्षों तक' हुआ।

उत्तर – यजुर्वेद के पहले श्लोक में 'शरदः शतम्' का अर्थ 'सौ वर्षों तक' है।

उदाहरण 2. कवि हरिदत्त शर्मा ने किस रचना संग्रह से 'शुचिपर्यावरणम्' पाठ संकलित किया है?

› पाठ के परिचय में कवि का नाम और उनकी रचना संग्रह का उल्लेख होता है।
› हमने पढ़ा कि यह पाठ आधुनिक संस्कृत कवि हरिदत्त शर्मा द्वारा रचित है।
› यह भी बताया गया कि यह पाठ उनके 'लसल्लतिका' नामक रचना संग्रह से लिया गया है।

उत्तर – कवि हरिदत्त शर्मा ने 'लसल्लतिका' नामक रचना संग्रह से 'शुचिपर्यावरणम्' पाठ संकलित किया है।

उदाहरण 3. कवि के अनुसार महानगरों में 'कालायसचक्रम्' कैसे घूमता है और इसका क्या प्रभाव है?

› श्लोक में 'चलदनिशं कालायसचक्रम्' बताता है कि लोहे का चक्र दिन-रात चलता है।

› 'भ्रमति सदा वक्रम्' से पता चलता है कि यह हमेशा टेढ़ा होकर घूमता है।

› इसका प्रभाव 'मनः शोषयत्' (मन को सुखाता है) और 'तनूः पेषयद्' (शरीर को पीसता है) बताया गया है।

› अंतिम पंक्ति 'दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्' यह चेतावनी देती है कि कहीं इसके भयानक दाँतों से मनुष्यों का विनाश न हो जाए।

उत्तर – महानगरों में लोहे का चक्र (मशीनें/वाहन) दिन-रात टेढ़ा होकर घूमता है। यह मनुष्य के मन को सुखाता है, शरीर को पीसता है, और कवि को चिंता है कि कहीं इसके भयानक प्रभाव से मानव का विनाश न हो जाए।

उदाहरण 4. कवि दूसरे श्लोक में महानगरों के प्रदूषण के किन रूपों का वर्णन करते हैं?

› पहला, कवि कहते हैं 'कज्जलमलिनं ध्ूमं मु×चति शतशकटीयानम्', जिसका अर्थ है सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ काजल जैसा काला धुआँ छोड़ती हैं।

› दूसरा, 'वाष्पयानमाला संधवति वितरन्ती ध्वानम्' - यानी रेलगाड़ियों की पंक्तियाँ बहुत शोर करती हुई चलती हैं।

› तीसरा, 'यानानां पघ्क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संसरणम्' - वाहनों की कतारें अनंत हैं और उनके कारण चलना भी मुश्किल हो गया है।

› तो इन तीनों बातों से हमें पता चलता है कि कवि वाहनों के धुएँ, शोर और यातायात जाम के कारण होने वाली कठिनाइयों का वर्णन कर रहे हैं।

उत्तर – कवि दूसरे श्लोक में महानगरों में वाहनों से निकलने वाले काजल जैसे काले धुएँ, रेलगाड़ियों के अत्यधिक शोर और सड़कों पर वाहनों की अंतहीन कतारों के कारण चलने में होने वाली कठिनाई का वर्णन करते हैं।

उदाहरण 5. श्लोक 3 के अनुसार, पर्यावरण के कौन-कौन से घटक दूषित हो रहे हैं और किस प्रकार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है?

› पहला घटक है 'वायुमंडलम्': कवि कहते हैं 'भृशं दूषितं', मतलब हवा बहुत ज़्यादा गंदी हो चुकी है।

› दूसरा घटक है 'जलम्': इसके लिए कहते हैं 'न हि निर्मलं जलम्', यानी पानी भी अब साफ़ नहीं है।

› तीसरा घटक है 'भक्ष्यम्' (भोजन): इसके लिए कहते हैं 'वुफत्सितवस्तुमिश्रितं', मतलब खाने-पीने की चीज़ों में बुरी चीज़ें मिलाई जा रही हैं, मिलावट हो रही है।

› चौथा घटक है 'ध्रातलम्' (ज़मीन): इसे 'समलं' कहा गया है, मतलब ज़मीन भी गंदगी से भरी हुई है।

› अंत में, कवि कहते हैं 'करणीयं बहिरन्तर्जगति तु बहु शु(ीकरणम्', यानी संसार में बाहर और अंदर, दोनों जगह बहुत ज़्यादा सफ़ाई करने की ज़रूरत है।

उत्तर – श्लोक 3 के अनुसार, वायुमंडल, जल, खाद्य पदार्थ (भोजन) और धरातल (ज़मीन) ये सभी घटक दूषित हो रहे हैं। इस प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए बाहरी और आंतरिक, दोनों प्रकार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है।

उदाहरण 6. कवि इस श्लोक में कहाँ और क्या देखने की इच्छा व्यक्त करते हैं?

› पहला, कवि 'अस्मान्नगराद् बहुदूरम्' यानी इस नगर से बहुत दूर जाना चाहते हैं।

› दूसरा, वह 'ग्रामान्ते' यानी गाँव की सीमा पर जाना चाहते हैं।

› तीसरा, वहाँ वे 'निर्झर-नदी-पयःपूरम्' यानी झरने, नदियाँ और जल देखना चाहते हैं।

› चौथा, और 'एकान्ते कान्तारे' यानी एकांत जंगल में क्षण भर के लिए 'स×चरणम्' यानी घूमना चाहते हैं।

उत्तर – कवि नगर से बहुत दूर गाँव की सीमा पर झरने, नदियाँ और जल देखना चाहते हैं, और एकांत जंगल में घूमना चाहते हैं।

उदाहरण 7. कवि को प्रकृति में क्या-क्या सुंदर लगता है?

› पहला वाक्य कहता है: 'हरिततरूणां ललितलतानां माला रमणीया।' - इसका अर्थ है हरे-भरे पेड़ और सुंदर लताओं की माला रमणीय है।

› दूसरा वाक्य कहता है: 'कुसुमावलिः समीरचालिता स्यान्मे वरणीया।।' - यानी हवा से हिलती हुई फूलों की पंक्ति कवि को प्रिय है।

› तीसरा वाक्य कहता है: 'नवमालिका रसालं मिलिता रुचिरं संगमनम्।' - इसका मतलब है नई चमेली का आम के पेड़ से मिलना एक सुंदर संगम है।

उत्तर – कवि को हरे-भरे पेड़ और सुंदर लताओं की माला, हवा से हिलती हुई फूलों की पंक्ति, और आम के साथ मिली हुई चमेली का सुंदर मेल बहुत आकर्षक लगता है।

उदाहरण 8. कवि अपने मित्र को कहाँ जाने के लिए प्रेरित कर रहा है और क्यों?

› पहला चरण: प्रश्न को समझो। यह पूछ रहा है कि कवि कहाँ जाने को कह रहा है और उसका कारण क्या है।

› दूसरा चरण: श्लोक में ढूंढो 'खगवुफलकलरवगुञ्जितवनदेशम्'। इसका मतलब है पक्षियों के कलरव से गूँजते हुए वन प्रदेश में।

› तीसरा चरण: कारण ढूंढो। श्लोक में 'पुर-कलरवसम्भ्रमितजनेभ्यो ध्ृतसुखसन्देशम्' है, यानी शहर के शोर से परेशान लोगों के लिए सुख का संदेश। और 'चाकचिक्यजालं nks वुफर्याज्जीवितरसहरणम्' मतलब चकाचौंध जीवन का रस न छीन ले।

› चौथा चरण: इन बिंदुओं को जोड़कर उत्तर लिखो।

उत्तर – कवि अपने मित्र को पक्षियों के कलरव से गूँजते हुए वन प्रदेश में जाने के लिए प्रेरित कर रहा है। इसका कारण यह है कि वह वन नगरीय कोलाहल से परेशान लोगों के लिए सुख का संदेश दे रहा है, और कवि चाहते हैं कि नगर की चकाचौंध उनके जीवन के आनंद को छीन न ले।

उदाहरण 9. श्लोक 7 में कवि पाषाणी सभ्यता से क्या आशय व्यक्त कर रहे हैं?

› पहला चरण: पाषाणी सभ्यता का अर्थ है 'पत्थरों की सभ्यता' या 'शहरीकरण' जहाँ कंक्रीट और मशीनों का बोलबाला है।

› दूसरा चरण: कवि चाहते हैं कि यह पाषाणी सभ्यता (शहर का विकास) प्रकृति में पूरी तरह समाविष्ट न हो जाए, यानी प्रकृति को नष्ट न करे।

› तीसरा चरण: उनका आशय है कि आधुनिक विकास प्रकृति को कुचले नहीं, बल्कि उसके साथ तालमेल बिठाकर चले।

उत्तर – श्लोक 7 में कवि पाषाणी सभ्यता से आधुनिक, अत्यधिक शहरीकृत जीवनशैली को संदर्भित कर रहे हैं, जो प्रकृति को नष्ट कर रही है। वह कामना करते हैं कि यह सभ्यता प्रकृति पर हावी न हो, बल्कि मानव और प्रकृति का सह-अस्तित्व बना रहे।

उदाहरण 10. पाठ में 'अनिशम्' शब्द आया है। इसका अर्थ कैसे पहचानेंगे?

› सबसे पहले, 'अनिशम्' शब्द को देखो।

› फिर, शब्दार्थ वाले खंड में इसे ढूँढो।

› वहाँ इसके सामने इसका हिंदी और अंग्रेजी अर्थ लिखा होगा।

› जैसे, 'अनिशम्' का हिंदी अर्थ 'दिन-रात' और अंग्रेजी में 'Day and Night' मिलेगा।

उत्तर – 'अनिशम्' का अर्थ है 'दिन-रात' या 'Day and Night'।

उदाहरण 11. प्रश्न: 'कविः किमर्थं प्रकृतेः शरणम् इच्छति?' का पूर्ण वाक्य में उत्तर दें।

› पहला चरण: प्रश्न का अर्थ समझें। 'कवि किसलिए प्रकृति की शरण चाहता है?'

› दूसरा चरण: पाठ में उस हिस्से को याद करें जहाँ कवि प्रकृति की शरण में जाने की बात कर रहा है।

› तीसरा चरण: पाठ के संदर्भ को जोड़कर उत्तर बनाएँ। कवि इसलिए प्रकृति की शरण चाहता है क्योंकि महानगरों में जीवन दूषित और कठिन हो गया है।

› चौथा चरण: संस्कृत में पूर्ण वाक्य उत्तर लिखें।

उत्तर – उत्तर: 'कविः महानगरेषु दूषितं जीवनं दृष्ट्वा प्रकृतेः शरणम् इच्छति।'

उदाहरण 12. दिए गए पद 'कज्जलमलिनं' का समास विग्रह कर समास का नाम बताइए।

› पहला चरण: पद को ध्यान से देखें – 'कज्जलमलिनं'।

› दूसरा चरण: इसका अर्थ समझें – 'काजल के समान मैला' या 'काजल जैसा काला'।

› तीसरा चरण: विग्रह करें – 'कज्जलम् इव मलिनम्'। 'इव' का अर्थ है 'के समान'।

› चौथा चरण: समास का प्रकार पहचानें। जहाँ पहला पद उपमान और दूसरा पद उपमेय हो, और 'इव' जैसे शब्द आएं, वहाँ 'उपमान-कर्मधारय' समास होता है। यह तत्पुरुष समास का ही एक भेद है, पर बोर्ड में इसे सीधे कर्मधारय भी लिख सकते हैं।

› पाँचवाँ चरण: इसका सही समास नाम है 'कर्मधारय समास' (तत्पुरुष का भेद)।

उत्तर – समास विग्रह: कज्जलम् इव मलिनम्। समास का नाम: कर्मधारय समास।

उदाहरण 13. हमारे 'शुचिपर्यावरणम्' पाठ के कवि का नाम क्या है? उनकी किसी एक अन्य रचना का नाम बताओ।

› पाठ में दिए गए 'कवि परिचय' खंड को ध्यान से पढ़ें।

› कवि का नाम 'प्रो. हरिदत्त शर्मा' मिलता है।

› उनकी रचनाओं की सूची में से 'लसल्लतिका', 'गीतवंदलिका', 'त्रिपथगा' आदि नाम मिलते हैं। कोई एक चुन लें।

उत्तर – पाठ के कवि प्रो. हरिदत्त शर्मा हैं। उनकी एक अन्य रचना 'लसल्लतिका' है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• कभी-कभी इन श्लोकों में से किसी एक पंक्ति का अर्थ पूछ लिया जाता है, या 'शरदः शतम्' जैसे पदों का भावार्थ पूछा जाता है। इन्हें अच्छे से समझ लेना।

• पाठ परिचय से संबंधित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे पूछे जाते हैं, जैसे कवि का नाम या पाठ की पृष्ठभूमि, इसलिए इसे अच्छे से याद करना।

• इस श्लोक से अक्सर 'भावार्थ' या 'संस्कृत में व्याख्या' वाले प्रश्न आते हैं। शब्दार्थों को अच्छे से याद रखना और कवि के मूल भाव को समझना बहुत ज़रूरी है।

• यह श्लोक प्रदूषण के कारणों का वर्णन करता है, और इससे संबंधित प्रश्न अक्सर भावार्थ या एक पद वाले उत्तर के रूप में आते हैं। शब्दों का सही अर्थ समझना बहुत ज़रूरी है।

• यह श्लोक बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सीधे-सीधे प्रदूषण के विभिन्न रूपों और उसके समाधान की बात करता है, जो अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में 'अन्वय' या 'भावार्थ' के रूप में पूछा जाता है।

• यह श्लोक सीधे-सीधे प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन है। इसकी हर पंक्ति से प्रश्न बन सकता है, जैसे 'कवि को क्या रमणीय लगता है?' या 'हवा से क्या हिलता है?' इसलिए एक-एक शब्द का अर्थ ध्यान से समझना।

• यह श्लोक कवि के प्रकृति प्रेम और नगर के प्रदूषण के प्रति उसकी चिंता को दर्शाता है। इससे संबंधित भावार्थ और शब्दार्थ परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

• यह श्लोक 'शुचिपर्यावरणम्' पाठ का एक महत्वपूर्ण नैतिक संदेश है। 'मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम्' वाली पंक्ति को अच्छी तरह समझ लें, क्योंकि इसके भावार्थ पर अक्सर प्रश्न आते हैं।

• बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे शब्दार्थ पूछ लिए जाते हैं या किसी श्लोक का अर्थ लिखने में इनकी बहुत ज़रूरत पड़ती है। इन्हें अच्छे से याद कर लेना।

• बोर्ड परीक्षा में अभ्यास कार्य से सीधे प्रश्न आते हैं। खास तौर पर संधि और अव्यय के प्रश्न गलत होने पर पूरे नंबर कटते हैं, इसलिए इनकी खूब प्रैक्टिस करें।

• समास और प्रश्न निर्माण, ये दोनों ही विषय बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हर बार एक प्रश्न तो आता ही है। सही विभक्ति और वचन का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है।

• कवि का नाम, उनकी रचनाएँ, और पाठ में प्रयुक्त छन्द का नाम बोर्ड परीक्षा में अक्सर 1-2 अंक के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में पूछा जाता है। तत्सम-तद्भव शब्दों का मिलान भी आ सकता है, ध्यान से पढ़ना।

एक नज़र में रिवीज़न

› मंगलाचरण = शुभ आरंभ; दीर्घायु, अच्छे स्वास्थ्य, कल्याणकारी विचारों की प्रार्थना।
› कवि हरिदत्त शर्मा; 'लसल्लतिका' संग्रह; महानगर प्रदूषण पर चिंता.
› महानगरों का लौहचक्र मन-शरीर का शोषक, विनाश का भय।
› वाहन प्रदूषण: काला धुआँ (काजलमलिनं), ट्रेन का शोर, अनंत यातायात।
› वायु, जल, भोजन, धरती दूषित; आंतरिक-बाह्य शुद्धिकरण आवश्यक।
› कवि की नगर से दूर, झरने, नदियों, एकांत जंगल में जाने की इच्छा।
› हरे पेड़, सुंदर लता, हवा में फूल, चमेली-आम संगम: प्राकृतिक सौंदर्य।
› नगर की चकाचौंध से मुक्ति, वन में पक्षियों संग शांति।
› मानवता-प्रकृति सह-अस्तित्व; पाषाणी सभ्यता प्रकृति पर हावी न हो; वास्तविक जीवन की कामना।
› कठिन शब्दों के अर्थ समझना, पाठ बोध के लिए आवश्यक।
› पाठ के अभ्यास प्रश्न - प्रश्नोत्तर, संधि, अव्यय, पर्यायवाची, विलोम।
› समास: पदों का संक्षिप्तीकरण; प्रश्न निर्माण: रेखांकित पद पर आधारित प्रश्नवाचक शब्द।
› कवि हरिदत्त शर्मा, 'गीतिका छन्द', पर्यावरण भाव, तत्सम-तद्भव।